Toppersnotes®
Unleash the topper in you

RAS

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

प्रारम्भिक एवं मुख्य परीक्षा

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग – 10

भारतीय अर्थशास्त्र एवं वैश्विक अर्थव्यवस्था

SIERRA INNOVATIONS

RAS – PRE & MAINS

भारतीय अर्थशास्त्र एवं वैश्विक अर्थव्यवस्था

S.No.	Chapter Name	Page No.

1.	**अर्थव्यवस्था के मूल सिद्धांत**
	• सूक्ष्म और स्थूल अर्थव्यवस्था
	• आर्थिक प्रणाली
	• अर्थव्यवस्था के क्षेत्र
	• माँग आपूर्ति प्रबंधन
	• आपूर्ति क्या है?
	  ○ आपूर्ति के निर्धारक
	  ○ आपूर्ति की लोच
	• बाजार संतुलन
	• मांग और आपूर्ति में परिवर्तन का प्रभाव
		1

2.	**बजट बनाना**
	• वार्षिक वित्तीय विवरण (बजट)
	  ○ बजट के प्रकार
	  ○ बजट घटक
	  ○ प्राप्तियां
	  ○ व्यय
	  ○ विकासात्मक और गैर-विकासात्मक व्यय
	  ○ योजनागत और गैर-योजनागत व्यय
	  ○ बजट में डेटा
	• बजट के अधिनियमन की प्रक्रिया
	  ○ बजट 2021
	• भौतिक और वित्तीय पूंजी और बुनियादी ढांचा:
	  ○ आर्थिक सर्वेक्षण 2021
	• सरकारी खाते
	• घाटा वित्तपोषण
		7

3.	**भारत में बैंकिंग**
	• वाणिज्यिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण
	• भारतीय रिजर्व बैंक (RBI)
	• भारत में बैंकों का विभाजन
	• विशिष्ट बैंक
	• गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थान (NBFC)
	• NBFC के रूप में पंजीकरण करने की शर्तें
	• बैंकिंग क्षेत्र में सुधार
	  ○ नरसिम्हम समिति-द्वितीय (1998)
	  ○ नचिकेत मोर समिति (2013)
	  ○ पीजे नायक समिति (2014)
	  ○ बेसल मानदंड
		11

	• दिवाला और दिवालियापन • सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में सुधार के लिए मिशन इंद्रधनुष • वित्तीय समावेशन • स्वर्ण निवेश योजनाएं	
4.	**लोक वित्त** • सार्वजनिक राजस्व • सरकारी व्यय • सार्वजनिक ऋण	**31**

5.	**कराधान**
	• कराधान के पीछे उद्देश्य
	• कराधान के तरीके
	• कर के प्रकार
	  ○ प्रत्यक्ष कर
	  ○ अप्रत्यक्ष कर
	• कर सुधार
	• राजा चेलिया समिति
	• केंद्र से राज्यों को फंड ट्रांसफर
	• कराधान में महत्वपूर्ण शर्तें
	• लाफ़र वक्र
	• अंतर्राष्ट्रीय कर संधियाँ
		34

6.	**राष्ट्रीय आय**
	• राष्ट्रीय आय के पहलू
	  ○ सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी)
	  ○ शुद्ध घरेलू उत्पाद(NDP)
	  ○ सकल राष्ट्रीय उत्पाद(GNP)
	  ○ सकल राष्ट्रीय उत्पाद(NNP)
	• राष्ट्रीय आय की गणना करने के तरीके
	• आर्थिक सांख्यिकी संबंधी स्थायी समिति
		47

7.	**संवृद्धि, और विकास**
	• आर्थिक संवृद्धि
	• आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक
	• आर्थिक विकास
	  ○ आर्थिक संवृद्धि और विकास के बीच अंतर
	• असमानता
	• खुशहाली
	  ○ निज और सार्वजनिक नीति
	• समावेशी वृद्धि और संबंधित मुद्दे
	• भारत में निर्धनता आकलन
	• जनसांख्यिकीय विभाजन
	• भारत में श्रम कानून
	• औपचारिक और अनौपचारिक अर्थव्यवस्था
	• सतत विकास लक्ष्य (SDGs)
		52

8.	**लेखांकन**	**64**

	• लेखांकन के लक्षण • लेखांकन के कार्य • लेखांकन के उद्देश्य • लेखांकन का वर्गीकरण • लेखांकन समीकरणों के नियम	
9.	**स्टॉक एक्सचेंज एवं शेयर बाज़ार** • प्राथमिक और द्वितीयक बाजार • शेयर बाजार • राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न स्टॉक एक्सचेंज • स्टॉक एक्सचेंजों में खिलाड़ी • भारतीय सुरक्षा और विनिमय बोर्ड (सेबी) • उत्पाद व्यवसाय • स्पॉट एक्सचेंज • शेयर बाजार की महत्वपूर्ण शब्दावली • विदेशी वित्तीय निवेश • सहभागी नोट (पी-नोट्स, या पीएन) • बचाव निधि(Hedge Fund) • क्रेडिट डिफ़ॉल्ट स्वैप (CDS) • प्रतिभूतिकरण(Securitization) • भारत में कॉरपोरेट बॉन्ड • गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड्स • केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम- एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (सीपीएसई ईटीएफ) • पेंशन क्षेत्र में सुधार • अचल संपत्ति और बुनियादी ढांचा निवेश ट्रस्ट	**68**

10.	**राजकोषीय**
	• राजकोषीय नीति
	• राजकोषीय नीति बनाम मौद्रिक नीति
	  ○ राजकोषीय नीति के प्रकार
	  ○ विकास
	• घाटा
	  ○ घाटे के प्रकार
	• राजकोषीय घाटे को नियंत्रित करने के उपाय
	• सार्वजनिक ऋण
	  ○ राज्यों को केंद्रीय स्थानांतरण
	  ○ राज्य वित्त
		78

11.	**मौद्रिक नीति** • मात्रात्मक उपकरण • गुणात्मक उपकरण • मौद्रिक नीति समिति • उर्जित पटेल समिति	**81**
12.	**सब्सिडी एवं सार्वजनिक वितरण प्रणाली** • सब्सिडी • सार्वजनिक वितरण प्रणाली	**85**

	• संवितरण के विभिन्न तरीके	
13.	**ई-कॉमर्स** • ई-वाणिज्य (E-COMMERCE) • उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019	**89**
14.	**मुद्रास्फीति** • मुद्रास्फीति के कारण • मुद्रास्फीति के प्रकार • WPI बनाम CPI • उत्पादक मूल्य सूचकांक(PPI) • आवास मूल्य सूचकांक • सेवा मूल्य सूचकांक (SPI) • मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण • मुद्रास्फीति के प्रभाव	**94**
15.	**अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्र** • भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक • अर्थव्यवस्था का प्राथमिक क्षेत्र से तृतीयक क्षेत्र की तरफ का क्रमिक विकास • विभिन्न क्षेत्रकों की पारस्परिक निर्भरता • भारत में विभिन्न सेक्टर का विकास और वर्तमान स्थिति • अर्थव्यवस्था के अन्य वर्गीकरण	**101**
16.	**कृषि एवं कृषि से जुड़े मुद्दे एवं पहल** • पंचवर्षीय योजनाओं के तहत कृषि का विकास • कृषि की वर्तमान स्थिति • भारतीय कृषि के लक्षण / विशेषताएं: • कृषि एवं हरित क्रांति • कृषि उत्पादकता को बढ़ाने के लिए सरकारी प्रयास • कृषि विपणन • खाद्य प्रसंस्करण एवं खाद्य प्रबंधन • न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) • अन्य कृषि योजनाये एंव कानून • कृषि संबद्ध गतिविधियों का प्रबंधन अतिरिक्त आय अर्जित करना • कृषि में युवाओं को आकर्षित करना और बनाए रखना (ICAR-ARYA)	**104**
17.	**उद्योग** • 1991 से पहले की औद्योगिक नीति • औद्योगिक नीति संकल्प, 1956 • नवरत्न, महारत्न और मिनीरत्न • भारत की महारत्न उपक्रम • औद्योगिक नीति वक्तव्य, 1977 • औद्योगिक नीति वक्तव्य, 1980 • 1991 के बाद की औद्योगिक नीति • व्यापार सुगमता • औद्योगिक वित्त • आधारभूत अवसंरचना • औद्योगिक विकास के चरण	**131**

18.	**सेवा क्षेत्र** • परिचय • सेवा क्षेत्र में व्यापार • प्रमुख सेवाएँ उप क्षेत्रवार प्रदर्शन तथा नवीनतम नीतियाँ	**145**
19.	**आर्थिक सुधार** • नई आर्थिक नीति • आर्थिक सुधारों की पीढ़ी	**154**
20.	**मानव विकास एवं वैश्विक खुशहाली सूचकांक** • मानव विकास सूचकांक (एचडीआई)	**160**
21.	**गरीबी एवं बेरोजगारी** • गरीबी • लोरेंज वक्र और गिनी गुणांक • भारत में गरीबी का आकलन • गरीबी के आकलन के लिए विभिन्न समितियों की अनुशंसाएँ • रंगराजन समिति • भारत में गरीबी के कारण • गरीबी का जाल • भारत में गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम • बहुआयामी निर्धनता सूचकांक • बेरोजगारी • भारत में बेरोज़गारी के कारण • बेरोज़गारी का प्रभाव • सरकार की पहल	**162**
22.	**स्वास्थ्य सेवा** • संवैधानिक प्रावधान • स्वास्थ्य संकेतक • भूख और कुपोषण • वैश्विक भूख सूचकांक (GHI) • भारत में स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली और बुनियादी ढाँचा • यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज (UHC) • नीतिगत ढाँचा • आयुष्मान भारत- राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा मिशन (AB-NHPM) • राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन, 2020 • आयुष	**172**
23.	**शिक्षा नीति** • भारत में शिक्षा • संवैधानिक प्रावधान • शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 • राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 • भारत में शिक्षा • विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	**184**

24.	**सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता** • कमजोर वर्गों के लिए कल्याणकारी योजनाओं का औचित्य • समाज के कमजोर वर्ग • बच्चों से जुड़े मुद्दे • अनुसूचित जनजाति/SC/OBC • युवा के बारे में • वरिष्ठ नागरिक • विकलांग व्यक्ति • अल्पसंख्यक • LGBT समुदाय	**193**
25.	**केंद्र राज्य सम्बन्ध एवं वित्त आयोग** • केंद्र राज्य वित्तीय संबंध • वित्त आयोग- • 15वाँ वित्त आयोग	**206**
26.	**आर्थिक गतिविधियों में सरकार की भूमिका** • निजी वस्तुएं • सार्वजनिक वस्तुएं • सार्वजनिक तथा निजी वस्तुओं में निम्न प्रमुख अन्तर - • मेरिट वस्तुएं • डिमेरिट या हानिकारक वस्तुयें	**212**
26.	**वैश्विक आर्थिक मुद्दे और प्रवृत्तियां** • वैश्विक आर्थिक मुद्दे • अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध • कच्चे तेल की कीमतों में बढ़ोतरी • विश्व बैंक • अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) • विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ)	**216**
27.	**सतत विकास एवं जलवायु परिवर्तन** • स्पेसशिफ अर्थव्यवस्था • सतत विकास लक्ष्य रिपोर्ट 2022 • एसडीजी रिपोर्ट में सुझाव • भारत और 'सतत विकास लक्ष्य' • नीति आयोग के एसडीजी इंडिया इंडेक्स • सतत विकास हेतु अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन : • जलवायु परिवर्तन • ओजोन • भारत और जलवायु परिवर्तन	**234**

Dear Aspirant,

Thank you for making the righ

To use the QR codes in the book, Pl

To install the ap
with your mobile
or Google Le

RAS Prepa
APP by Top

Download fr
Google Play

To Register
Phone Num

Choose your

Click SCAN

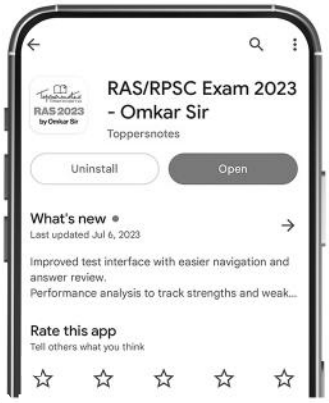

Choose any QR CODE f ... ook

- Solution Videos
- Concept Videos
- Doubt Videos

- Additional Learning Material

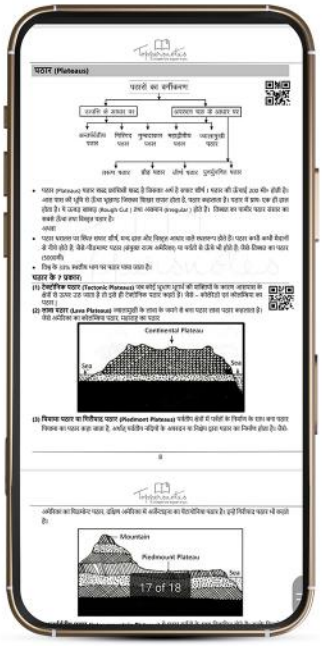

- Topic wise practice
- Weakness analysis

- Rank Predictor
- Test Practice

For any technical help, write us at **hello@toppersnotes.com or whatsapp on 7665641122.**

राजस्थान लोक सेवा आयोग

राजस्थान राज्य एवं अधीनस्थ सेवाएँ संयुक्त प्रतियोगी (प्रारम्भिक) परीक्षा, 2023

:– परीक्षा योजना एंव पाठ्यक्रम :–

आर्थिक अवधारणाएँ एवं भारतीय अर्थव्यवस्था

अर्थशास्त्र की मूलभूत अवधारणाएं :–

- बजट निर्माण, बैंकिंग, लोक–वित्त, वस्तु एवं सेवा कर, राष्ट्रीय आय, संवृद्धि एवं विकास का आधारभूत ज्ञान
- लेखांकन– अवधारणा, उपकरण एवं प्रशासन में उपयोग
- स्टॉक एक्सचेंज एवं शेयर बाजार
- राजकोषीय एवं मौद्रिक नीतियाँ
- सब्सिडी, लोक वितरण प्रणाली
- ई–कॉमर्स
- मुद्रास्फीति– अवधारणा, प्रभाव एवं नियंत्रण तंत्र

आर्थिक विकास एवं आयोजन :–

- अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्र : कृषि, उद्योग, सेवा एवं व्यापार क्षेत्रों की वर्तमान स्थिति, मुद्दे एवं पहल।
- प्रमुख आर्थिक समस्याएं एवं सरकार की पहल, आर्थिक सुधार एवं उदारीकरण।

मानव संसाधन एवं आर्थिक विकास :–

- मानव विकास सूचकांक
- वैश्विक खुशहाली सूचकांक
- गरीबी एवं बेरोजगारी–अवधारणा, प्रकार, कारण, निदान एवं वर्तमान फ्लेगशिप योजनाएं

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता :–

कमजोर वर्गों के लिए प्रावधान।

राजस्थान राज्य एवं अधीनस्थ सेवाएं संयुक्त प्रतियोगी (मुख्य) परीक्षा, 2023

–: परीक्षा योजना एवं पाठ्यक्रम :–

इकाई ।। – अर्थव्यवस्था

खण्ड अ– भारतीय अर्थशास्त्र

- कृषि– भारतीय कृषि में वृद्धि एवं उत्पादकता की प्रवृत्तियाँ। खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र और खाद्य प्रबंधन। कृषिगत सुधार और चुनौतियाँ।
- औद्योगिक क्षेत्र की प्रवृत्तियाँ – औद्योगिक नीति एवं औद्योगिक वित्त। उदारीकरण, वैश्वीकरण, निजीकरण और आर्थिक सुधार। अवसंरचना और आर्थिक वृद्धि।
- स्फीति, कीमतें और मांग/पूर्ति प्रबंधन।
- केन्द्र–राज्य वित्तीय संबंध और नवीनतम वित्त आयोग। राजकोषीय उत्तरदायित्व एवं बजट प्रबंधन अधिनियम और भारत में राजकोषीय सुधार।
- बजटीय प्रवृतियाँ और राजकोषीय नीति। भारत में कर सुधार। अनुदान– नकद हस्तान्तरण और अन्य संबंधित मुद्दे। राजस्व और व्यय की प्रवृतियाँ।
- आर्थिक गतिविधियों में सरकार की भूमिका। निजी, सार्वजनिक और मेरिट वस्तुऐं।
- सामाजिक क्षेत्र– गरीबी, बेरोजगारी और असमानता। स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा नीति। प्रभावी नियामक की समस्या। आर्थिक विकास में राज्य की भूमिका को पुनर्भाषित करना और रोज़गार उन्मुख वृद्धि व्यूह रचना।

खण्ड ब– वैश्विक अर्थव्यवस्था

- वैश्विक आर्थिक मुद्दे और प्रवृत्तियाँ : विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व व्यापार संगठन की भूमिका।
- सतत् विकास एवं जलवायु परिवर्तन।

1
CHAPTER

अर्थव्यवस्था के मूल सिद्धांत

सूक्ष्म और स्थूल अर्थव्यवस्था

सूक्ष्म अर्थव्यवस्था	स्थूल अर्थव्यवस्था
• व्यक्तिगत और व्यावसायिक निर्णयों का अध्ययन किया जाता है। माँग और आपूर्ति, साथ ही अन्य कारक जो मूल्य स्तरों को प्रभावित करते हैं। • संभावित निवेशकों द्वारा निर्णय लेने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। • एक स्वस्थ अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं को दर्शाता है। • यह भविष्यवाणी भी करता है कि भविष्य में किन वस्तुओं और सेवाओं की अत्यधिक माँग होगी। • प्रोफेसर राग्नार फ्रिस्क ने सूक्ष्मअर्थशास्त्र शब्द दिया।	• इस बात का अध्ययन करता है कि देश और सरकारें व्यावसायिक निर्णय कैसे लेते हैं। • अर्थव्यवस्था की दिशा और प्रकृति को समझने के लिए ऊपर से नीचे तक पूरी खोज करती है। • आर्थिक और राजकोषीय नीति का विश्लेषण करने की एक विधि है। • सुनिश्चित करती है कि देश के आर्थिक संसाधनों का उपयोग उनकी पूरी क्षमता के लिए किया जाता है या नहीं। • जॉन मेनार्ड कीन्स को आम तौर पर समकालीन समष्टि आर्थिक सिद्धांत का जनक माना जाता है।

आर्थिक प्रणाली

- संसाधनों को आवंटित करने और पूरे देश में वस्तुओं और सेवाओं को वितरित करने के लिए संस्थागत व्यवस्थाओं और समन्वय तंत्र का समूह

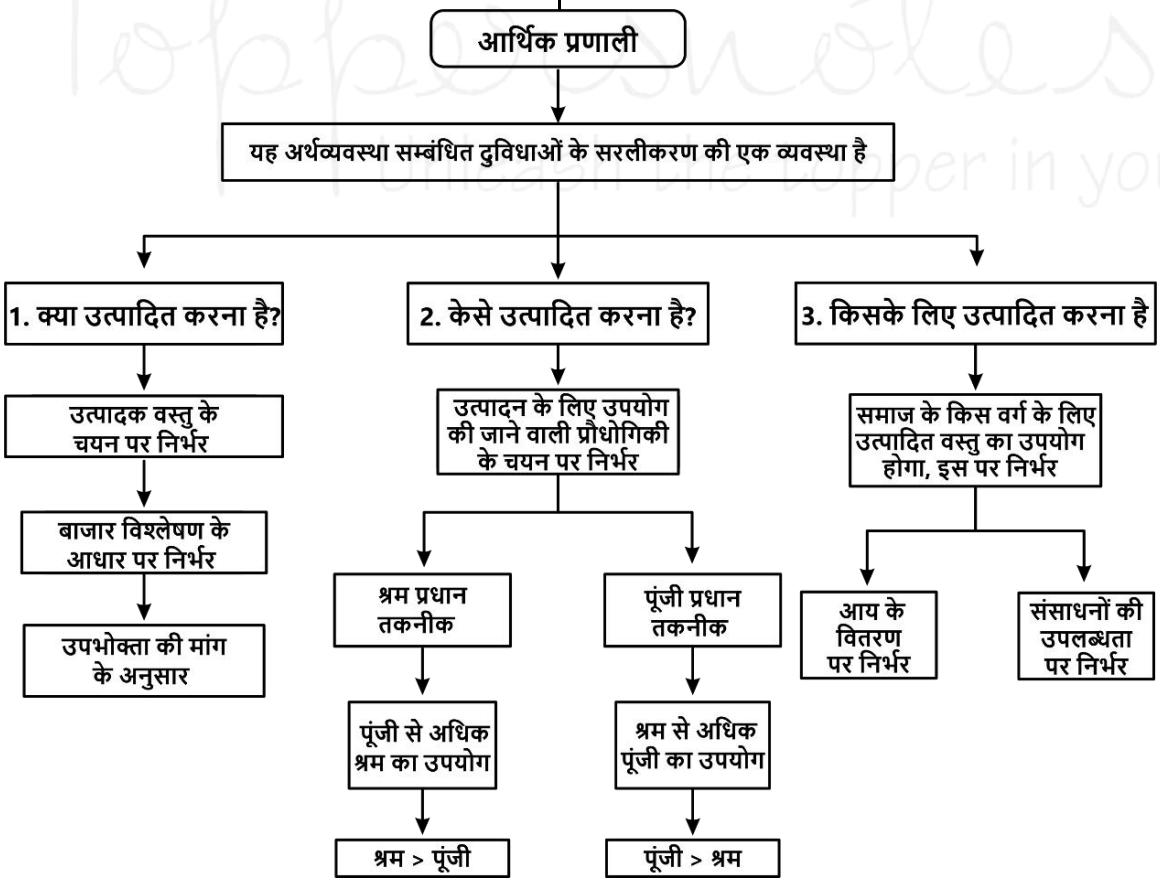

विभिन्न आर्थिक प्रणालियाँ

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था	• एक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में उत्पन्न उत्पादों को व्यक्तियों के बीच वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने की क्षमता के आधार पर वितरित किया जाता है, बजाय इसके कि वे क्या चाहते हैं। • उत्पादों और सेवाओं को खरीदने के लिए व्यक्ति के पास पर्याप्त धन होना चाहिए। • माँग के बावजूद क्रय शक्ति की कमी के कारण माल का उत्पादन नहीं हो सकता है।
समाजवादी अर्थव्यवस्था	• सरकार तय करती है कि क्या, कैसे और किसके लिए उत्पाद बनाया जाए। • व्यक्तिगत खरीददारों पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता। • सिद्धांत रूप में समाजवाद के तहत साझा करना इस आधार पर होता है कि प्रत्येक व्यक्ति को क्या चाहिए, न कि वह जो वहन कर सकता है। • समाजवादी शासन में कोई अलग संपत्ति नहीं।
मिश्रित अर्थव्यवस्था	• अर्थव्यवस्था कभी भी स्थायी रूप से राज्य के हस्तक्षेप या मुक्त बाजार की ओर नहीं झुकी बल्कि अर्थव्यवस्था की सामाजिक-आर्थिक स्थिति की आवश्यकताओं के अनुसार हमेशा राज्य और बाजार का संतुलित मिश्रण रही।

पूंजीवादी, समाजवादी और मिश्रित अर्थव्यवस्थाओं में अंतर

मापदंड	पूँजीवादी अर्थव्यवस्था	समाजवादी अर्थव्यवस्था	मिश्रित अर्थव्यवस्था
स्वामित्व	निजी	सार्वजनिक	सार्वजनिक और निजी दोनों
मूल्य निर्धारण	बाजार की ताकतों से	केंद्रीय नियोजन प्राधिकरण द्वारा।	केंद्रीय योजना प्राधिकरण और बाजार शक्तियों द्वारा
उत्पादन का उद्देश्य	लाभ कमाना	सामाजिक कल्याण	निजी क्षेत्र में लाभ और सार्वजनिक क्षेत्र में कल्याण
सरकार की भूमिका	कोई भूमिका नहीं	पूर्ण नियंत्रण में	सार्वजनिक क्षेत्र में पूर्ण भूमिका और निजी क्षेत्र में सीमित
प्रतिस्पर्द्धा	मौजूद	कोई प्रतियोगिता नहीं	केवल निजी क्षेत्र में
आय वितरण	बहुत असमान	बिल्कुल बराबर	काफ़ी असमानताएँ मौजूद होती हैं

अर्थव्यवस्था के क्षेत्र

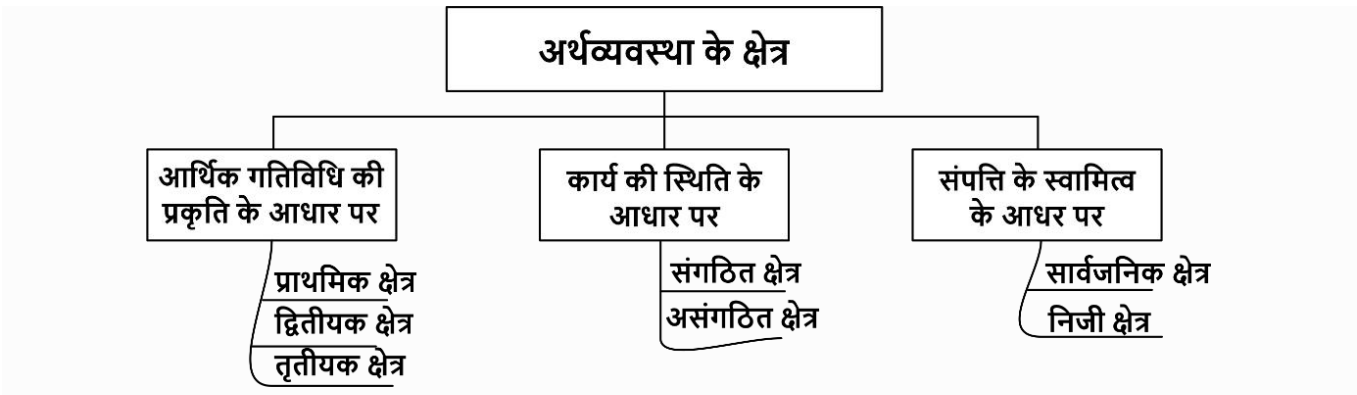

आर्थिक गतिविधि की प्रकृति पर आधारित

प्राथमिक क्षेत्र

- प्राकृतिक संसाधनों की निकासी या कच्चे माल के निर्माण में शामिल उद्योग।
- उदाहरण के लिए कृषि, मछली पकड़ना और खनन आदि।

द्वितीयक क्षेत्र

- उपयोगी वस्तुओं या पूर्ण वस्तुओं के उत्पादन में शामिल उद्योग
- जैसे: भारी और हल्के उद्योग (इस्पात, रसायन और ऑटोमोबाइल) (भोजन, परिधान, सौंदर्य प्रसाधन)।

तृतीयक क्षेत्र

- अन्य फर्मों या अंतिम उपभोक्ताओं को सेवाएँ प्रदान करना।
- उदाहरण: खुदरा, स्वास्थ्य देखभाल, और अन्य उद्योग

चतुर्थक क्षेत्र	• ज्ञान के निर्माण और प्रसार में निहित। • जैसे: अनुसंधान और विकास, शिक्षा आदि।
पंचम क्षेत्र	• किसी अर्थव्यवस्था में निर्णय लेने का उच्चतम स्तर।
गुलाबी कॉलर नौकरियाँ	• वह नौकरी जिसे पारंपरिक रूप से महिलाओं का काम या महिला-उन्मुख नौकरी माना जाता है। • अधिक पेशेवर प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती है। • जैसे: दाई, फूलवाला, डे केयर वर्कर, नर्स आदि।

कार्य की स्थिति पर आधारित

संगठित क्षेत्र

- उन उद्यमों या कार्यस्थलों को शामिल करता है जहाँ रोजगार की शर्तें नियमित होती हैं।
- सरकार द्वारा पंजीकृत और इसके नियमों और विनियमों का पालन करना होता है जो विभिन्न कानूनों जैसे फैक्ट्री अधिनियम, न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, ग्रेच्युटी भुगतान अधिनियम, दुकान और प्रतिष्ठान अधिनियम आदि में दिए गए हैं।

असंगठित क्षेत्र

- छोटी और बिखरी हुई इकाइयाँ जो सरकार के नियंत्रण में नहीं होती हैं। नियम और कानून हैं लेकिन उनका पालन नहीं किया जाता है।
- कम वेतन वाली नौकरियाँ, अक्सर नियमित नहीं होती हैं।
- रोजगार सुरक्षित नहीं है और नियोक्ता की इच्छा पर निर्भर करता है।
- असंगठित श्रमिक सामाजिक सुरक्षा अधिनियम, 2008 की अनुसूची- II में उल्लिखित कल्याणकारी योजनाओं से संबंधित किसी भी अधिनियम द्वारा कवर नहीं किया गया है।
- इसके अंतर्गत घर पर काम करने वाले कर्मचारी या स्वरोजगार करने वाले कर्मचारी या मजदूरी करने वाले कर्मचारी शामिल किए जाते हैं।

संपत्ति के स्वामित्व के आधार पर

सार्वजनिक क्षेत्र

- स्वामित्व: सरकार के तहत।
- मुख्य रूप से सार्वजनिक वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करने के उद्देश्य से।
- जैसे: रेलवे, भारतीय डाक सेवाएँ, आदि।

निजी क्षेत्र

- स्वामित्व: निजी व्यक्तियों या कंपनियों के अधीन।
- उदाहरण: टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी लिमिटेड (टिस्को) या रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) जैसी कम्पनियाँ निजी स्वामित्व वाली हैं।

सूर्योदय उद्योग

- वह औद्योगिक क्षेत्र जो अभी अपनी प्रारंभिक अवस्था में है, लेकिन तेजी से उछाल का वादा करता है।
- उच्च विकास दर, उच्च स्तर के नवाचार और आम तौर पर इस क्षेत्र के बारे में बहुत सारी जन जागरूकता होती है और निवेशक इसकी दीर्घकालिक विकास संभावनाओं से आकर्षित होते हैं।
- जैसे:
  - सूचना प्रौद्योगिकी
  - दूरसंचार क्षेत्र
  - स्वास्थ्य सेवा
  - आधारभूत संरचना क्षेत्र
  - खुदरा क्षेत्र
  - खाद्य प्रसंस्करण उद्योग
  - मत्स्य पालन

माँग आपूर्ति प्रबंधन

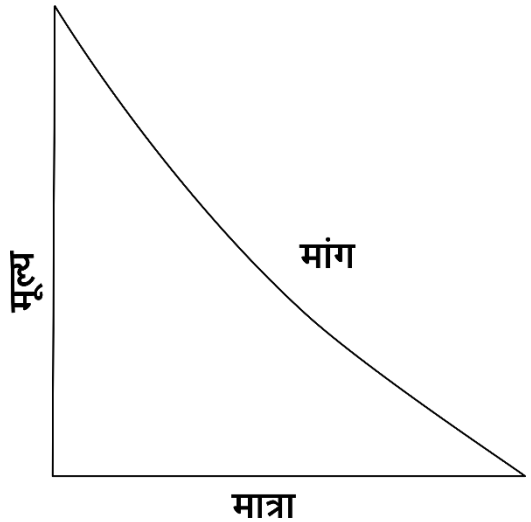

माँग वक्र: यह वस्तु की कीमत और उपभोक्ता द्वारा एक निश्चित समय सीमा में उस वस्तु को खरीद पाने की क्षमता के मध्य सम्बन्ध को प्रदर्शित करता है।यह वक्र वरीयताओं, उपभोक्ता की आय, संबंधित वस्तुओं की कीमतों, अपेक्षाओं और खरीदारों की संख्या पर निर्भर करता है।

माँग के निर्धारक

- अच्छी कीमत
- क्रेता द्वारा उत्पाद की वरीयता या इच्छा का स्तर
- क्रेता की आय
- संबंधित उत्पादों की कीमतें :
  - स्थानापन्न उत्पाद (खरीदार की राय में उत्पाद के साथ सीधे प्रतिस्पर्द्धा; जैसे चाय और कॉफी)
  - पूरक उत्पाद (खरीदार की राय में वस्तु के साथ प्रयुक्त; जैसे कार और पेट्रोल)
- भविष्य की अपेक्षाएँ
  क्रेता की अपेक्षित आय।
  वस्तु का अपेक्षित मूल्य।

माँग में कमी करने वाले परिवर्तन

- स्थानापन्न वस्तु की घटी हुई कीमत
- पूरक वस्तु की बढ़ी हुई कीमत
- सामान्य वस्तु है तो आय में कमी
- आय में वृद्धि अगर अवर वस्तु है।

माँग की लोच

- मूल्य चर (P) में परिवर्तन के लिए मात्रा चर (Q) की संवेदनशीलता का एक उपाय
- लोच का अनुमान लगाने में महत्वपूर्ण है कि राजस्व कैसे भिन्न होगा क्योंकि यह इस मुद्दे का उत्तर देता है कि मूल्य में 1% परिवर्तन के लिए प्रतिशत के संदर्भ में मात्रा कितनी बदलेगी।
- बेलोचदार मांग वक्र अधिक है क्योंकि P में पर्याप्त परिवर्तन भी Q में थोड़ा परिवर्तन उत्पन्न करता है।
- जैसे: खाद्यान्न: अगर कीमत बहुत बढ़ जाती है, तो भी लोग अपनी खपत कम नहीं करेंगे; और अगर P गिरता है, तो लोग अपनी खपत नहीं बढ़ाएंगे।

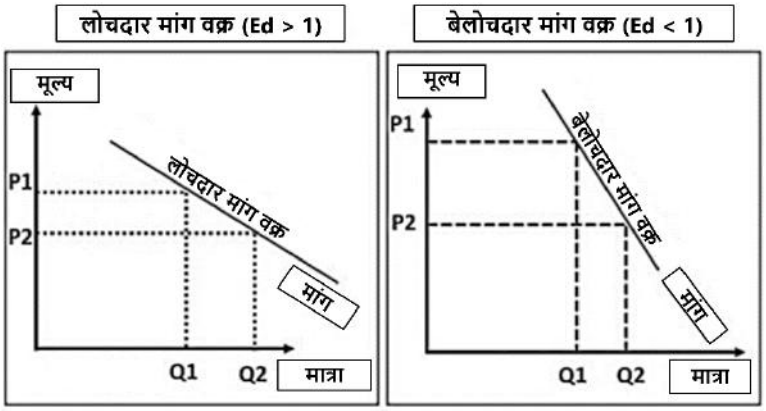

आपूर्ति क्या है?

- एक वस्तु की वह मात्रा जो एक कंपनी एक निश्चित कीमत पर बेचने को तैयार होती है।
- 'आपूर्ति वक्र' का पालन किया जाता है। कीमत जितनी अधिक होगी, कंपनी को उतना ही अधिक बेचने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा।

वस्तु की आपूर्ति बढ़ेगी:

- लाभ = कुल राजस्व - कुल लागत
- राजस्व = उत्पादन की बिक्री के माध्यम से प्राप्त धन = मूल्य (पी) x मात्रा (क्यू)
- यदि अन्य सभी कारक स्थिर रहते हैं, तो उच्च मूल्य के परिणामस्वरूप लाभ होगा।
- माँग का नियम: जैसे-जैसे कीमत बढ़ती है, अनुरोधित मात्रा (Qd) घटती जाती है।
- आपूर्ति का नियम: जैसे-जैसे कीमत बढ़ती है, वैसे-वैसे प्रदान की गई मात्रा भी होती है (Qs)

आपूर्ति के निर्धारक

कर	• जैसे-जैसे कर बढ़ता है, आपूर्ति गिरती है और आपूर्ति वक्र बाईं ओर शिफ्ट हो जाती है। • विनिर्माण लागत और लेवी में वृद्धि का समान प्रभाव पड़ेगा। • 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के बाद सरकार ने आपूर्ति बढ़ाने के लिए करों में कटौती की। • इसके परिणामस्वरूप आपूर्ति वक्र दायीं ओर खिसक गया।
उत्पादन लागत	• यदि उत्पादन की लागत बढ़ती है, तो आपूर्ति भी बढ़ती है। • आपूर्ति वक्र में बदलाव: जैसे-जैसे विनिर्माण लागत बढ़ती है, प्रदान की गई राशि कम हो जाती है और आपूर्ति वक्र बाईं ओर स्थानांतरित हो जाता है।
	• जब उत्पादन की लागत गिरती है, तो उत्पादित मात्रा में वृद्धि होती है। • आपूर्ति वक्र दाईं ओर तिरछा होगा।
कंपनी के लक्ष्य	• लाभ हमेशा किसी कंपनी का मुख्य लक्ष्य नहीं होता है। • इसका उद्देश्य बिक्री बढ़ाना या सामाजिक कल्याण में सुधार करना हो सकता है। • इस परिदृश्य में आपूर्ति बढ़ने पर आपूर्ति वक्र दाईं ओर झुकता है। • अच्छी बारिश से भी आपूर्ति में वृद्धि हो सकती है, जिसके परिणामस्वरूप कृषि आपूर्ति में वृद्धि हो सकती है।

आपूर्ति की लोच

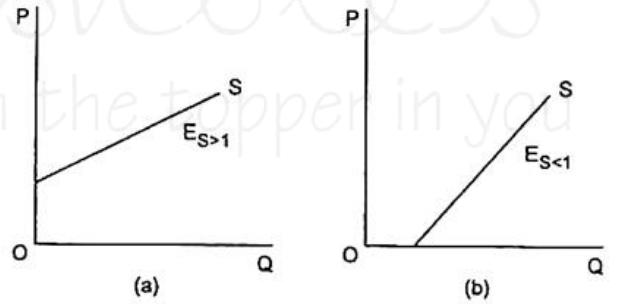

"कीमत में बदलाव के लिए आपूर्ति की गई मात्रा की प्रतिक्रिया"

- उच्च लोच: यदि परिवर्तन तीव्र है
- लोच (एस): (आपूर्ति की मात्रा में% परिवर्तन) / (कीमत में% परिवर्तन)
- यदि Es>1: आपूर्ति लोचदार है
- यदि Es<1: आपूर्ति बेलोचदार है

आपूर्ति की लोच के निर्धारक

- समग्र निर्धारक विकल्प है: फर्म के पास जितना अधिक विकल्प, उतना अधिक लोच
  - उदाहरण के लिए जल्दी खराब होने वाली वस्तु की मात्रा: फर्म के पास स्टोर करने का कोई विकल्प है/विकल्प नहीं है; किसी भी कीमत पर बेचना होगा।
  - कृषि वस्तुओं के लिए: बेलोचदार आपूर्ति।

बाजार संतुलन

- आवश्यक मात्रा = उपलब्ध मात्रा.
  संतुलन: माँग और आपूर्ति वक्र के प्रतिच्छेदन का बिंदु।
- आदर्श स्थिति: वह स्थिति जिसमें खरीदार और विक्रेता दोनों अधिकतम उपयोगिता और संतुष्टि प्राप्त करते हैं।
- बाजार दो तरह के लोगों से मिलकर बनता है: क्रेता और विक्रेता
  - खरीदार अपने आनंद को बढ़ाने के लिए सस्ता मूल्य निर्धारण चाहते हैं।
  - विक्रेता अधिक मुनाफा चाहते हैं।
- यदि कीमत संतुलन स्तर से कम हो जाती है, तो कमी हो जाएगी।
- स्वाभाविक रूप से दोनों पक्षों के हितों में कीमत बढ़ेगी।
  - संतुलन मूल्य में वृद्धि के परिणामस्वरूप अधिक आपूर्ति होगी, जिससे आपूर्तिकर्ताओं को अपने सभी सामान बेचने के लिए अपनी कीमतें कम करनी होंगी।

उपभोक्ता संतुलन: वह स्थिति जिसमें एक उपभोक्ता अपनी आय को कई वस्तुओं पर इस तरह खर्च करता है कि उसे अधिकतम सुख प्राप्त हो।

प्रोड्यूसर इक्विलिब्रियम: वह बिंदु जिस पर वह सबसे अधिक लाभ अर्जित करते हुए सबसे अधिक उत्पादन करता है।

मांग एवं आपूर्ति का सिद्धांत

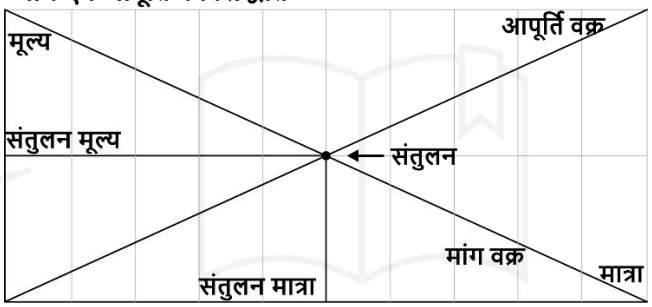

मांग और आपूर्ति में परिवर्तन का प्रभाव

आपूर्ति/मांग में परिवर्तन	मूल्य पर प्रभाव	उदाहरण
जब आपूर्ति बढ़ती है	कीमतों में कमी	मंडियों में कृषि उपज की आपूर्ति में वृद्धि
जब डिमांड बढ़ती है	कीमतें बढ़ जाती हैं	नवरात्रि के दौरान फलों की कीमत

2 CHAPTER बजट बनाना

वार्षिक वित्तीय विवरण (बजट)

- बजट शब्द का प्रयोग संविधान में कहीं नहीं किया गया है।
- **अनुच्छेद 112:** केंद्रीय बजट - जिसे वार्षिक वित्तीय विवरण (AFS) कहा जाता है।
- इसमें सरकार की अनुमानित प्राप्तियां और व्यय (एक वित्तीय वर्ष) शामिल हैं। (चालू वर्ष के 1 अप्रैल से अगले वर्ष के 31 मार्च तक)।

बजट के प्रकार

संतुलित बजट	• सरकार अपने द्वारा एकत्रित राजस्व के बराबर राशि खर्च कर सकती है।
अधिशेष बजट	• यदि अपेक्षित सरकारी राजस्व किसी विशेष वित्तीय वर्ष में अनुमानित सरकारी व्यय से अधिक है।
घाटा बजट	• यदि अनुमानित सरकारी व्यय किसी विशेष वित्तीय वर्ष में अपेक्षित सरकारी राजस्व से अधिक है।
परिणाम बजट	• यह एक ऐसा बजट है जो परिव्ययों को परिणामों में परिवर्तित करता है, • व्यय की योजना बनाकर, उपयुक्त लक्ष्य निर्धारित करके, प्रदेयों की मात्रा निर्धारित करके। • विभिन्न मंत्रालयों के अंतर्गत प्रत्येक योजना/कार्यक्रम के परिणामों को सभी की जानकारी में लाना।
लिंग बजटिंग	• यह एक लेखांकन अभ्यास नहीं है बल्कि नीति/कार्यक्रम निर्माण, इसके कार्यान्वयन और समीक्षा में एक जेंडर परिप्रेक्ष्य रखने की एक सतत प्रक्रिया है।
शून्य आधारित बजटिंग	• हर बार बजट बनने पर सभी खर्चों का मूल्यांकन किया जाता है और प्रत्येक नई अवधि के लिए खर्चों को उचित ठहराया जाता है।
सूर्यास्त बजटिंग	• एक समय सीमा के साथ घोषित - एक निर्धारित समय के भीतर आत्म-विनाश के लिए डिज़ाइन किया गया।

बजट घटक

- राजस्व और पूंजीगत प्राप्तियों का अनुमान।
- राजस्व बढ़ाने के तरीके और साधन।
- व्यय का अनुमान।
- वास्तविक प्राप्तियों और व्यय का विवरण (अंतिम वित्तीय वर्ष ।
- आने वाले वर्ष की आर्थिक और वित्तीय नीति।
    - इसमें कराधान प्रस्ताव, राजस्व की संभावनाएं, व्यय कार्यक्रम और नई योजनाओं/परियोजनाओं की शुरूआत शामिल है।

प्राप्तियां

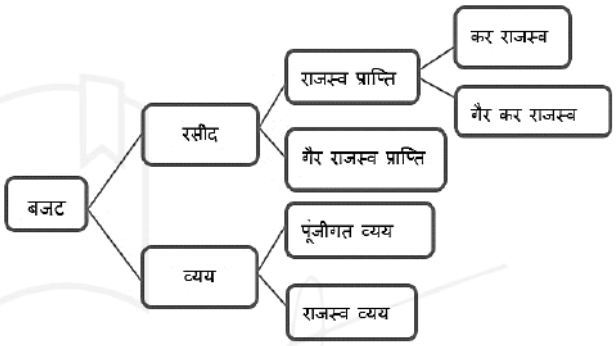

राजस्व प्राप्तियां	• कर राजस्व: सरकार द्वारा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कर के रूप में एकत्र किया जाता है। • गैर-कर राजस्व: PSU से लाभ और लाभांश, सरकार द्वारा प्राप्त अनुदान, वित्तीय और सामान्य सेवाएं, सरकार द्वारा अग्रेषित ऋण पर ब्याज, शुल्क, दंड, जुर्माना आदि।
गैर-राजस्व प्राप्तियां	• सरकार द्वारा लिया गया ऋण जो सरकार पर वित्तीय दायित्व रखता है।

व्यय

राजस्व व्यय	• किसी भी संपत्ति के निर्माण या दायित्व में कमी के कारण व्यय नहीं। • जैसे: सरकारी कर्मचारियों का वेतन, ऋण पर ब्याज भुगतान, पेंशन, सब्सिडी, अनुदान, ग्रामीण विकास, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं आदि। • उद्देश्य : सरकारी मशीनरी के सामान्य कामकाज को सुनिश्चित करना।

	○ किसी भी पूंजीगत संपत्ति का निर्माण नहीं करना। ○ प्रकृति में आवर्ती
पूंजीगत व्यय	• व्यय या तो एक संपत्ति बनाता है (जैसे स्कूल की इमारत) या देयता को कम करना (जैसे ऋण का पुनर्भुगतान)। • ऋण का पुनर्भुगतान (यह देयता को कम करता है)। • प्रकृति में गैर-आवर्ती।

विकासात्मक और गैर-विकासात्मक व्यय

विकासात्मक व्यय	गैर-विकासात्मक व्यय
• उत्पादक प्रकृति के सभी व्यय • **उदाहरण:** नए कारखानों, बांधों, पुलों, सड़कों, रेलवे, आदि के प्रमुखों पर सभी निवेश	• उपभोग्य प्रकार के व्यय और इसमें कोई उत्पादन शामिल नहीं है • **उदाहरण:** वेतन, पेंशन, ब्याज भुगतान, सब्सिडी, रक्षा खर्च आदि का भुगतान।

योजनागत और गैर-योजनागत व्यय

योजना व्यय	गैर योजना व्यय
• सभी व्यय - भारत में नियोजन के नाम पर किया जाता है • विकासात्मक व्यय के रूप में जाना जाता है • उदाहरण: सभी परिसंपत्ति निर्माण, और उत्पादक व्यय	• व्यय : अनियोजित • गैर-विकासात्मक के रूप में जाना जाता है • उदाहरण: सभी उपभोग्य, गैर-उत्पादक, गैर-परिसंपत्ति भवन

बजट में डेटा

वास्तविक अनुमान	• सरकार द्वारा संबंधित क्षेत्र को दी गई वास्तविक राशि का प्रतिनिधित्व करता है।
	•
बजट अनुमान (BE)	• आने वाले वित्तीय वर्ष के लिए किसी भी मंत्रालय या योजना को बजट में आवंटित राशि। • वास्तविक से BE में परिवर्तन अवधि के लिए चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) का प्रतिनिधित्व करता है। • सरकार की इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता है।
संशोधित अनुमान (RE)	• बजट के शेष, नई सेवाओं और सेवा के साधनों आदि को ध्यान में रखते हुए संभावित व्यय का मध्य वर्ष का मूल्यांकन।
	• इन पर संसद द्वारा मतदान नहीं किया जाता है और इसलिए ये स्वयं खर्च करने के लिए कोई प्राधिकरण नहीं देते हैं। • संशोधित अनुमानों में किए गए किसी भी अतिरिक्त अनुमानों को खर्च करने से पहले संसद या पुनर्विनियोग आदेश द्वारा अनुमोदित किया जाना चाहिए।
त्वरित अनुमान (QE)	• नवीनतम स्थिति को दर्शाने वाले संशोधित अनुमान का प्रकार। • किसी क्षेत्र या उप-क्षेत्र के लिए भविष्य के अनुमानों के लिए उपयोगी। • यह एक अंतरिम डेटा भी है।
अग्रिम अनुमान (AE)	• एक त्वरित अनुमान की तरह लेकिन अंतिम चरण से पहले जब डेटा एकत्र किया जाता है। • यह एक अंतरिम डेटा भी है।

बजट के अधिनियमन की प्रक्रिया

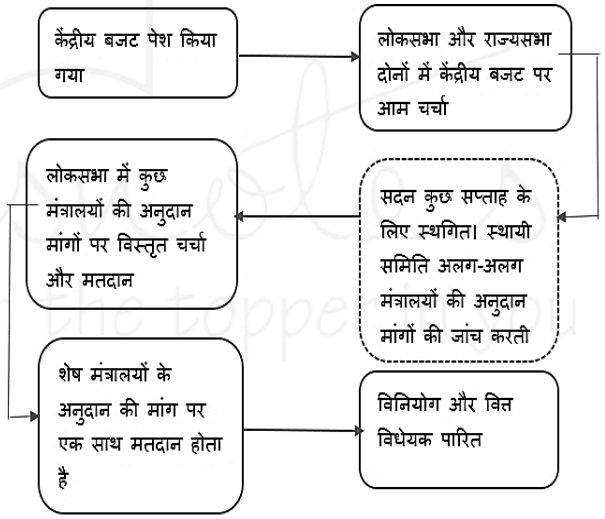

सरकारी खाते

भारत की संचित निधि	• यह एक ऐसा कोष है जिसमें सभी प्राप्तियों को जमा किया जाता है और सभी भुगतानों को डेबिट किया जाता है। • **शामिल** ○ सरकार द्वारा प्राप्त सभी राजस्व।

	○ ट्रेजरी बिल, ऋण या अग्रिम के तरीके और साधन जारी करके उठाए गए सभी ऋण, ○ प्राप्त सभी धन - ऋणों के पुनर्भुगतान में भारत की संचित निधि का निर्माण होता है।
भारत का सार्वजनिक खाता	• अन्य सभी सार्वजनिक धन (उनके अलावा जो CFI में जमा किए जाते हैं) सरकार द्वारा या सरकार की ओर से प्राप्त किए जाते हैं, और भारत के सार्वजनिक खाते में जमा किए जाते हैं। • शामिल हैं: भविष्य निधि जमा, न्यायिक जमा, बचत बैंक जमा, विभागीय जमा, प्रेषण आदि • इस तरह के भुगतान ज्यादातर बैंकिंग लेनदेन की प्रकृति में होते हैं।
भारत की आकस्मिकता निधि	• इस कोष को कानून द्वारा निर्धारित राशि का समय-समय पर भुगतान किया जाता है।

घाटा वित्तपोषण

- **घाटा वित्तपोषण:** राजस्व से अधिक व्यय के परिणामस्वरूप होने वाले घाटे को वित्तपोषित करने के लिए धन का सृजन।
- **स्रोत:** बाहरी सहायता, बाहरी अनुदान, बाहरी और आंतरिक उधार, मुद्रा की छपाई।

भारत में घाटा वित्तपोषण

- स्वतंत्रता के ठीक बाद भारत को एक नियोजित अर्थव्यवस्था घोषित किया गया था।
- रुपये के साथ-साथ विदेशी मुद्रा रूपों में भी भारी धन की आवश्यकता थी क्योंकि सरकार की विकास जिम्मेदारियां बहुत अधिक थीं।
- भारत को अपनी पंचवर्षीय योजनाओं का समर्थन करने के लिए आवश्यक निधि के प्रबंधन में निरंतर संकट का सामना करना पड़ा क्योंकि न तो विदेशी धन लिया जा सकता था और न ही आंतरिक संसाधन पर्याप्त मात्रा में जुटाए जा सकते थे।
- 1960 के दशक के अंत तक, सरकार ने घाटे के वित्तपोषण की ओर अग्रसर किया और 1970 के दशक से, भारत ने उच्च और उच्च राजकोषीय घाटे के लिए जाना शुरू कर दिया और हर नए साल के साथ घाटे के वित्तपोषण में वृद्धि पर अधिक से अधिक निर्भर हो गया।

घाटे के वित्तपोषण की आवश्यकता

- यह तब होता है जब सरकार को विकास और विकास के लिए जाने के लिए किसी विशेष अवधि में अर्जित या उत्पन्न होने से अधिक धन खर्च करने की आवश्यकता होती है।
- एक बार वृद्धि होने के बाद, आय से अधिक खर्च किए गए अतिरिक्त धन की प्रतिपूर्ति या पुनर्भुगतान किया जाता है।
- भारत ने 1969 में घाटे के वित्तपोषण में अपना हाथ आजमाया और 1970 के दशक से यह एक नियमित घटना बन गई।

घाटे के वित्तपोषण के साधन

- ये वे तरीके हैं जिनके द्वारा सरकार विकास या राजनीतिक जरूरतों के लिए अपने बजट को बनाए रखने के लिए घाटे के रूप में बनाई गई राशि का उपयोग करती है।

ये साधन नीचे दिए गए हैं:

बाहरी सहायता	• सरकार की घाटे की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ये सबसे अच्छे साधन हैं • सरकार अपनी आर्थिक जरूरतों को बनाए रखने के लिए किसी भी अंतरराष्ट्रीय संस्था या किसी अन्य देश से बाहरी सहायता प्राप्त कर सकती है • इन्हें नरम ब्याज या बिना ब्याज के दिया जा सकता है
बाहरी उधार	• राजकोषीय घाटे को प्रबंधित करने का ये अगला सबसे अच्छा तरीका है • चूंकि बाहरी ऋण तुलनात्मक रूप से सस्ते और लंबी अवधि के होते हैं। • इन्हें आंतरिक उधारों से बेहतर माना जाता है: ○ बाहरी उधार विदेशी मुद्रा/हार्ड मुद्रा लाता है जो सरकारी खर्च को अतिरिक्त बढ़त देता है। • चूंकि बाहरी ऋण तुलनात्मक रूप से सस्ते और लंबी अवधि के होते हैं। • इनके अपने फायदे हैं और इन्हें दो कारणों से आंतरिक उधारी से बेहतर माना जाता है: ○ सरकारी खर्च को अतिरिक्त बढ़त देता है क्योंकि इससे सरकार देश के अंदर और साथ ही देश के बाहर से अपनी विकासात्मक आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है। ○ इसे 'क्राउडिंग आउट इफेक्ट' के कारण आंतरिक उधारी पर प्राथमिकता दी जाती है। ○ जिसका अर्थ है कि सरकार देश के बैंकों से उधार लेती है और दूसरों के लिए निवेश उद्देश्यों के लिए उधार लेने की गुंजाइश नहीं बची है
आंतरिक उधार	• यह राजकोषीय घाटे के प्रबंधन के तीसरे पसंदीदा मार्ग के रूप में आता है। • लेकिन यह सार्वजनिक और कॉर्पोरेट क्षेत्र की निवेश संभावनाओं को बाधित करता है।

	• **अर्थव्यवस्था पर प्रभाव:** अर्थव्यवस्था दोहरे नकारात्मक प्रभाव की ओर अग्रसर है ○ कम निवेश: कम उत्पादन, कम सकल घरेलू उत्पाद और कम प्रति व्यक्ति आय, आदि) और ○ अर्थव्यवस्था में आम जनता के साथ-साथ कॉर्पोरेट जगत द्वारा कम मांग - अर्थव्यवस्था या तो गतिरोध के लिए चलती है या मंदी के लिए ○ उदाहरण: भारत में 1960, 1970, 1980 के दशक में बार-बार हुआ।
मुद्रण मुद्रा	• यह सरकार के लिए अपने घाटे के प्रबंधन का अंतिम उपाय है।

	• इसके साथ सबसे बड़ी बाधा यह है कि सरकार उन खर्चों के लिए नहीं जा सकती जो विदेशी मुद्रा में किए जाने हैं **अर्थव्यवस्था पर प्रभाव:** • यह मुद्रास्फीति को आनुपातिक रूप से बढ़ाता है। • **उदाहरण:** 1970 के दशक की शुरुआत से भारत नियमित रूप से इसके लिए गया और आमतौर पर दोहरे अंकों की मुद्रास्फीति को सहन करना पड़ा। • यह सरकारी कर्मचारियों के वेतन और वेतन में वृद्धि के लिए सरकार पर नियमित दबाव और दायित्व लाता है • अंततः सरकारी व्यय में वृद्धि के कारण मुद्रा की और छपाई और आगे मुद्रास्फीति की आवश्यकता हुई।

Toppersnotes Unleash the topper in you

3 CHAPTER भारत में बैंकिंग

- 1770: बैंक ऑफ हिन्दुस्तान की स्थापना हुई।
- भारतीयों द्वारा स्थापित पहला बैंक: इलाहाबाद बैंक
- 1921: 3 प्रेसिडेंशियल बैंकों का विलय इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया (एकल प्रमुख बैंक) के रूप में हुआ।
  - बैंक ऑफ बंगाल
  - बैंक ऑफ बॉम्बे
  - बैंक ऑफ मद्रास
- 1921: भारतीय मुद्रा और वित्त पर रॉयल कमीशन का गठन किया गया (हिल्टन यंग की अध्यक्षता)।
- आयोग की सिफारिशों के आधार पर 1934 में RBI अधिनियम पारित किया गया।
- 1934: भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) की स्थापना हुई।
- 1955 : भारतीय स्टेट बैंक की स्थापना हुई।

वाणिज्यिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण

- 1955: 3 इंपीरियल बैंकों का आंशिक रूप से राष्ट्रीयकरण किया गया।
- पहला सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक: भारतीय स्टेट बैंक।
- RBI ने इस आंशिक राष्ट्रीयकरण में 92% शेयर खरीदे।

राष्ट्रीयकरण का चरण (1969-1991)

- जुलाई 1969: 14 प्रमुख बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया।
- 1980 में: भारत सरकार ने अन्य 6 वाणिज्यिक बैंकों का अधिग्रहण किया।

सूची (1969)	सूची (1980)
इलाहाबाद बैंक	पंजाब एंड सिंध बैंक
बैंक ऑफ बड़ौदा	विजय बंक
बैंक ऑफ इंडिया	ओरिएंटल बैंक ऑफ इंडिया
महाराष्ट्र का प्रतिबंध	कॉर्पोरेट बैंक
सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया	आंद्रा बैंक
केनरा बैंक	न्यू बैंक ऑफ इंडिया
देना बैंक	
इंडियन बैंक	
इंडियन ओवरसीज बैंक	
पंजाब नेशनल बैंक	
सिंडिकेट बैंक	
यूको बैंक	
यूनियन बैंक	
यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया	

राष्ट्रीयकरण करने के कारण (1969)

- भारत में वाणिज्यिक बैंक
  - विकास की आवश्यकताओं के अनुसार कार्य नहीं करना
  - बैंक: उद्योगपतियों और व्यापारियों के एक समूह द्वारा नियंत्रित।
  - छोटी औद्योगिक और व्यावसायिक इकाइयों की उपेक्षा की गई (छोटे क्षेत्र की मदद करने के लिए सरकार की नीति के बावजूद)।
- कृषि ऋण न के बराबर था लेकिन राष्ट्रीयकरण के बाद
- शाखाओं की संख्या के साथ विस्तार।
  - प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र के ऋण में वृद्धि हुई।
  - जमा संग्रहण और बैंक ऋण देने का स्तर बढ़ा।
  - बैंकों ने उद्यमिता को बढ़ावा देने वाली योजनाओं का वित्तपोषण शुरू किया।

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI)

- अप्रैल 1935 में परिचालन शुरू किया।
- रिजर्व बैंक (सार्वजनिक स्वामित्व में स्थानांतरण) अधिनियम, 1948 को स्वतंत्रता के बाद सरकार द्वारा पारित किया गया।
- 1 जनवरी 1949 को राष्ट्रीयकरण किया गया।

RBI के मुख्य कार्य

मौद्रिक प्राधिकरण	• मौद्रिक नीति को विकसित, कार्यान्वित करना और उस पर निगरानी रखना। • उद्देश्य: विकास को आगे बढ़ाते हुए मूल्य स्थिरता बनाए रखना।
वित्तीय प्रणाली के नियामक और पर्यवेक्षक	• देश की बैंकिंग और वित्तीय प्रणाली शासित करता है। • कार्य: ○ 1949 का बैंकिंग विनियमन अधिनियम द्वारा बैंकों का विनियमिन और पर्यवेक्षण करता है। ○ विनियमन और पर्यवेक्षण: NBFC ○ जमाकर्ताओं के हितों की रक्षा करना।
विदेशी मुद्रा प्रबंधक	• विदेशी मुद्रा भंडार का प्रबंधन करता है।

	• उद्देश्य: ○ अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और भुगतान को सुगम बनाना। ○ भारत के विदेशी मुद्रा बाजार का विकास और रखरखाव।
मुद्रा जारीकर्ता	• RBI: करेंसी नोट जारी करने का एकमात्र अधिकार। • नकदी और सिक्कों का आदान-प्रदान और उन्हें नष्ट करना जो अब संचलन के लिए उपयुक्त नहीं हैं। • उद्देश्य: ○ सुनिश्चित करना कि जनता के पास उत्कृष्ट स्थिति में नकद नोटों और सिक्कों की पर्याप्त आपूर्ति हो।
विकास	• वित्तीय साक्षरता और वित्तीय समावेशन।
भुगतान और निपटान प्रणाली की निगरानी	• भुगतान और निपटान प्रणाली की देखरेख के लिए प्रभारित किया गया। ○ 2007 के भुगतान और निपटान प्रणाली अधिनियम और 2008 के भुगतान और निपटान प्रणाली विनियम के तहत। • भुगतान और निपटान प्रणाली के विनियमन और पर्यवेक्षण के लिए RBI का बोर्ड: ○ केंद्रीय बोर्ड की एक उपसमिति ○ भुगतान प्रणाली पर देश की सर्वोच्च नीति बनाने वाली संस्था।
अन्य कार्य	• सरकार का बैंकर। • संघीय और राज्य सरकारों को मर्चेंट बैंकिंग सेवाएं प्रदान करता है। • सरकारी प्रतिभूति अधिनियम, 2006 के तहत सार्वजनिक ऋण का प्रबंधन करता है।

भारतीय रिजर्व बैंक की आय और व्यय के स्रोत

आय	व्यय
• विदेशी मुद्रा में रखी गई संपत्ति पर रिटर्न। • रुपये मूल्यवर्ग के सरकारी बांड जिन पर ब्याज प्राप्त होता है। • वाणिज्यिक बैंकों को रातोंरात उधार देने पर ब्याज प्राप्त होता है। • केंद्र और राज्य सरकार की उधारी (प्रबंधन आयोग)।	• मुद्रा की छपाई। • कर्मचारी व्यय। • वाणिज्यिक बैंकों को दिया गया कमीशन। • प्राथमिक डीलरों को कमीशन।

भारतीय रिजर्व बैंक के भंडार और अधिशेष पूंजी

भारतीय रिजर्व बैंक की न्यूनतम रिजर्व प्रणाली

- 200 करोड़: सरकार के पास सोना (सोने या सोने के बुलियन में 115 करोड़ रुपये और विदेशी मुद्रा में 85 करोड़ रुपये)।
- शेष को RBI द्वारा जारी और धारित सरकारी प्रतिभूतियों का समर्थन प्राप्त है।

भारतीय रिजर्व बैंक की संपत्ति और देनदारियां

संपत्तियां	देयताएं
• विदेशी मुद्रा संपत्ति • बिल खरीद और छूट • वाणिज्यिक बैंकों द्वारा संपार्श्विक • ऋण और अग्रिम	• रुपया प्रतिभूतियां सोने का बुलियन • जनता द्वारा आयोजित मुद्रा • वाणिज्यिक बैंकों द्वारा रखी गई तिजोरी नकद सरकारी प्रतिभूतियां • अन्य देनदारियां

बैंकों में RBI शिकायत निवारण तंत्र

उद्देश्य: बैंकों द्वारा प्राप्त शिकायतों की मात्रा और प्रकृति पर स्पष्टता सुनिश्चित करना।

शिकायत प्रबंधन प्रणाली

- 2019: बैंकिंग सेवाओं की शिकायत निवारण प्रक्रिया में ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाने के लिए RBI ने शिकायत प्रबंधन प्रणाली (CMS) शुरू की।
- CMS : उल्लंघन के आधार पर RBI के पास शिकायत दर्ज करने के लिए आवेदन:
  - बैंकिंग लोकपाल (BO) योजना, 2006।
  - NBFC के लिए लोकपाल योजना, 2018
- CMS व्यक्तियों को RBI की किसी भी विनियमित संस्थाओं जैसे वाणिज्यिक बैंकों, शहरी सहकारी बैंकों और गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के खिलाफ RBI की वेबसाइट पर अपनी शिकायत दर्ज करने में सक्षम करेगा।

विशेषताएं

- SMS/ई-मेल अधिसूचना (सूचनाओं) के माध्यम से स्वीकार्य
- एक अद्वितीय पंजीकरण संख्या के माध्यम से स्थिति पर नज़र रखना।
- समापन की प्राप्ति सलाह और अपील दायर करना।
- यह ग्राहक के अनुभव पर स्वैच्छिक प्रतिक्रिया भी मांगता है।

लोकपाल योजना - RBI शिकायत निवारण तंत्र

यदि बैंक किसी ग्राहक के किसी भी आवेदन पर कार्रवाई करने में असमर्थ है, तो वह संबंधित बैंक के आंतरिक बैंकिंग लोकपाल के समक्ष इस मुद्दे को उठा सकता है।

लोकपाल

- लोकपाल: एक सरकारी अधिकारी जो सार्वजनिक संगठनों के खिलाफ आम लोगों द्वारा की गई शिकायतों को निपटाता है।
- अर्थ: किसी सेवा या प्रशासनिक प्राधिकरण के खिलाफ शिकायतों को संभालने के लिए विधायिका द्वारा नियुक्त अधिकारी।
- उत्पत्ति: स्वीडन।
- भारत में निम्नलिखित क्षेत्रों में शिकायतों के समाधान के लिए एक लोकपाल की नियुक्ति की जाती है।
  - बीमा लोकपाल
  - आयकर लोकपाल
  - बैंकिंग लोकपाल

RBI एकीकृत लोकपाल योजना

- **एकीकरण:** 2006 की बैंकिंग लोकपाल योजना, 2018 की NBFC के लिए लोकपाल योजना और 2019 के डिजिटल लेनदेन की लोकपाल योजना।
- **कार्य:** यह भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा विनियमित संस्थाओं द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं में अपर्याप्तता के बारे में उपभोक्ता शिकायतों का निवारण प्रदान करता है, जैसे बैंक, NBFC और प्रीपेड साधन प्लेयर, यदि शिकायत ग्राहक की संतुष्टि के लिए संबोधित नहीं की जाती है या विनियमित इकाई द्वारा 30 दिनों की अवधि के भीतर जवाब नहीं दिया जाता है।
- इसमें 50 करोड़ रुपये या इससे अधिक की जमा राशि वाले गैर-अनुसूचित प्राथमिक सहकारी बैंक भी शामिल हैं।
- यह एक "एक राष्ट्र, एक लोकपाल" दृष्टिकोण पर आधारित है और एकीकृत ढांचे के कारण यह क्षेत्राधिकार-तटस्थ है।

विशेषताएं

- अपवादों की सूची के साथ शिकायत के आधार के रूप में 'सेवा में कमी' प्रदान करता है ताकि शिकायतों को अब केवल इसलिए खारिज नहीं किया जाएगा क्योंकि वे "योजना में सूचीबद्ध आधारों के तहत कवर नहीं किए गए थे।"
- **केंद्रीकृत प्राधिकरण:** पहल क्षेत्राधिकार-तटस्थ है और किसी भी भाषा में पहली शिकायतों को संभालने के लिए चंडीगढ़ में एक केंद्रीकृत स्थापित किया गया है।
- **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्रौद्योगिकियों को शामिल करना:** जिससे बैंक और जांच अधिकारी कम से कम समय में बेहतर सहयोग कर सकें।
- **उपयोगकर्ता के अनुकूल:** शिकायत करने, दस्तावेज़ भेजने, स्थिति ट्रैक करने और टिप्पणियां प्रदान करने के लिए एकल ई-मेल पता।
- **टोल-फ्री हॉटलाइन:** कई भाषाओं में शिकायत समाधान पर सभी प्रासंगिक जानकारी के लिए।
- **जवाबदेही:** यदि लोकपाल पर्याप्त और समय पर जानकारी प्रदान करने में विफल रहने पर एक विनियमित इकाई के खिलाफ कोई निर्णय जारी करता है तो विनियमित इकाई को अपील करने का कोई अधिकार नहीं होगा।
- **अपीलीय प्राधिकारी:** भारतीय रिजर्व बैंक के कार्यकारी निदेशक-उपभोक्ता शिक्षा और संरक्षण विभाग के प्रभारी

महत्व

- बढ़ी हुई शिकायत निवारण प्रक्रिया ने भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा विनियमित फर्मों के खिलाफ उपभोक्ता शिकायतों के समाधान में मदद की।
- मानकीकरण और सरल उपयोगकर्ता के अनुकूल तरीकों को बढ़ावा देने, योजना के मूल्य को बढ़ाने और ग्राहकों की संतुष्टि और वित्तीय समावेश को बढ़ावा देने के लिए।
- एकल प्राधिकरण द्वारा एकल लोकपाल 44 करोड़ ऋण खाताधारकों और 220 करोड़ जमा खाता उपयोगकर्ताओं की तुरंत मदद करेगा, क्योंकि वे अब उसी पोर्टल पर शिकायत करने और उसकी निगरानी करने में सक्षम होंगे।

बिमल जालान समिति

- वर्ष: 2018
- जनादेश: RBI के आर्थिक पूंजी ढांचे की समीक्षा करना।
- अध्यक्ष: बिमल जालान (RBI के पूर्व गवर्नर)

सिफारिश

- **RBI की आर्थिक पूंजी:** आर्थिक पूंजी के दो घटकों (प्राप्त इक्विटी और पुनर्मूल्यांकन शेष) के बीच एक स्पष्ट अंतर की सिफारिश की गई थी।
  - **वास्तविक इक्विटी:** सभी जोखिमों / हानियों को पूरा करने के लिए उपयोग किया जाता है क्योंकि वे मुख्य रूप से प्रतिधारित आय से बनाए गए थे।
  - **पुनर्मूल्यांकन शेष:** बाजार जोखिमों के खिलाफ केवल जोखिम बफर के रूप में उपयोग किया जाता है क्योंकि वे अप्राप्त मूल्यांकन लाभ का प्रतिनिधित्व करते थे और इसलिए वितरण योग्य नहीं थे।
- **बाजार जोखिम के लिए जोखिम प्रावधान:** RBI के बाजार जोखिम को मापने के लिए तनावग्रस्त परिस्थितियों (जोखिम में मौजूदा तनावग्रस्त मूल्य के स्थान पर) के तहत अपेक्षित कमी (ES:Expected Shortfall) पद्धति को अपनाने की सिफारिश की।
  - इसने ES 99.5% कॉन्फिडेंस लेवल (CL) के लक्ष्य को अपनाने की सिफारिश की है।
- **वास्तविक इक्विटी का आकार:** आकस्मिक जोखिम बफर (CRB: Contingent Risk Buffer) को RBI की

बैलेंस शीट के 6.5% से 5.5% की सीमा के भीतर बनाए रखा जाना चाहिए, जिसमें मौद्रिक और वित्तीय स्थिरता जोखिमों के लिए 5.5% से 4.5% और क्रेडिट व परिचालन जोखिमों के लिए 1.0% शामिल हैं।

- **अधिशेष वितरण नीति:** RBI द्वारा बनाए रखने के लिए वास्तविक इक्विटी के स्तर को लक्षित करता है।
    - इसके तहत पूरी शुद्ध आय सरकार को तभी हस्तांतरित की जा सकती है जब वास्तविक इक्विटी उसकी आवश्यकता से अधिक हो।
- इसने यह भी सुझाव दिया है कि हर पांच साल के बाद RBI के आर्थिक पूंजी ढांचे की समय-समय पर समीक्षा की जा सकती है।

भारत में बैंकों का विभाजन

केंद्रीय अधिकोष (RBI)	**अनुसूचित बैंक**	वाणिज्यिक बैंक	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक
			निजी क्षेत्र के बैंक
			विदेशी बैंक
			क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक
		सहकारी बैंक	राज्य सहकारी बैंक
			केंद्रीय सहकारी बैंक
			प्राथमिक कृषि ऋण समितियां
	गैर-अनुसूचित बैंक	चुकता पूंजी <5 लाख	
		स्वदेशी बैंक	
	विशिष्ट बैंक	विकास बैंक	
		विभेदित बैंक	

अनुसूचित बैंक

- सूचीबद्ध : RBI अधिनियम 1934 की दूसरी अनुसूची।
- बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 के प्रावधानों के तहत विनियमित।
- RBI से बैंक दर ऋण के लिए पात्र (बैंक दर, रेपो दर, MSF आदि)
- पेड-अप कैपिटल और रिजर्व 5 लाख से कम नहीं होना चाहिए।
- बैंक की किसी भी गतिविधि से जमाकर्ताओं के हितों पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए।

प्रकार

वाणिज्यिक बैंक	• **सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक:** 50% से अधिक सरकार के पास है • **निजी क्षेत्र के बैंक :** अधिकांश पूंजी निजी क्षेत्र के हाथों में है। • **विदेशी बैंक:** उनके पंजीकृत और प्रधान कार्यालय एक विदेशी देश में हैं लेकिन भारत में अपनी शाखाएं संचालित करते हैं • **क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक:** बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं के साथ ग्रामीण क्षेत्रों की सेवा के लिए गठित

सहकारी बैंक	• **राज्य सहकारी बैंक:** संबंधित राज्यों के संबंधित सहकारी समितियों के अधिनियमों के तहत राज्य सरकारों द्वारा पंजीकृत और शासित • **केंद्रीय सहकारी बैंक**: बैंकिंग कार्य करना और सदस्य समितियों की ऋण आवश्यकताओं को पूरा करना। • **प्राथमिक कृषि ऋण समितियाँ:** यह ग्रामीण स्तर पर काम करती है और अपनी वित्त पोषण आवश्यकताओं के लिए केंद्रीय सहकारी और राज्य सहकारी बैंकों पर निर्भर करती है

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक

- प्रथम RRB: 2 अक्टूबर (प्रथम ग्रामीण बैंक)।
    - क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक अधिनियम 1976 के तहत।
- इनके बीच संयुक्त उद्यम:
    - केंद्र सरकार (50%)
    - राज्य सरकार (15%)
    - वाणिज्यिक बैंक (35%)

उद्देश्य

- बुनियादी बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं के साथ मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों की सेवा करने की दृष्टि से बनाया गया।
- अपेक्षाकृत असेवित वर्गों की क्रेडिट जरूरतों को पूरा करना **जैसे:**
  - छोटे और सीमांत किसान,
  - खेतिहर मजदूर और
  - सामाजिक-आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग
  - ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे उद्यमियों के लिए :
    - कृषि का विकास,
    - व्यापार, वाणिज्य,
    - उद्योग और अन्य उत्पादक गतिविधियाँ।
- शहरी परिचालन के लिए RRB शाखाएं स्थापित कर सकते हैं
- उनके संचालन के क्षेत्र में शामिल हो सकते हैं: अर्द्ध-शहरी या शहरी क्षेत्र भी।

सहकारी बैंक

- राज्य सहकारी समिति अधिनियम,1912 के तहत पंजीकृत।
- इसके सदस्यों से संबंधित है (जो एक ही समय में बैंक के मालिक और ग्राहक हैं)।
- "नो प्रॉफिट नो लॉस" मॉडल के तहत काम करते हैं।
- मुख्य रूप से कृषि और ग्रामीण क्षेत्र को उधार देने पर ध्यान देता है।
- सहकारी समितियों के रजिस्ट्रार और आरबीआई के दोहरे नियंत्रण में।
- सदस्यों के बोर्ड को "एक सदस्य एक वोट" के साथ चुना जाता है।
- प्राथमिक वित्तीयन क्षेत्र:
  - कृषि गतिविधियाँ,
  - कुछ लघु उद्योग,
  - स्व-नियोजित श्रमिक।
- पारस्परिक सहायता के सहकारी सिद्धांतों के अनुसार कार्य करता है।
- अल्पावधि ऋण के लिए।
- सहकारी बैंकों की संरचना 3 स्तरीय होती है:
  1. प्राथमिक (कृषि या शहरी) क्रेडिट सोसायटी
  2. जिला केंद्रीय सहकारी बैंक
  3. शीर्ष स्तर पर - राज्य सहकारी बैंक
- दीर्घकालिक ऋण:
  1. भूमि विकास बैंक
  2. सहकारी और ग्रामीण विकास बैंक

गैर अनुसूचित बैंक

- इनका उल्लेख RBI अधिनियम, 1934 की दूसरी अनुसूची में नहीं है।
- जमाकर्ताओं के हितों की सेवा करने और उनकी रक्षा करने में अक्षम समझा गया।
- इन्हें भी CRR आरक्षित रखना होता है।(स्वयं के पास रख सकते हैं)
- वे आम तौर पर आकार में छोटे होते हैं और उनका प्रभाव सीमित होता है।
- आरक्षित पूंजी: 5 लाख रुपये से कम।
- RBI के अनुसार 11 गैर-अनुसूचित राज्य सहकारी बैंक।
- RBI के अनुसार 1500 गैर-अनुसूचित शहरी सहकारी बैंक।
- RBI से ऋण प्राप्त नहीं कर सकत।(आपात स्थिति में अनुमति है ।

विशिष्ट बैंक

विभेदित बैंक

भुगतान बैंक	लघु वित्तीय बैंक
• उषा थोराट समिति की सिफारिशों के आधार पर। • जमा स्वीकार कर सकते हैं: प्रति व्यक्तिगत ग्राहक केवल 1 लाख रुपये तक। • किसी भी रूप में ऋण नहीं दे सकते। • छोटे बचत खाते खोल सकते हैं। • प्रेषण सेवाएं प्रदान कर सकते हैं। • ATM/डेबिट कार्ड जारी करने की अनुमति। • क्रेडिट कार्ड जारी करने की अनुमति नहीं है। • उत्पादों को वितरित कर सकते हैं,जैसे : ○ म्यूचुअल फंड्स ○ बीमा ○ तृतीय पक्ष ऋण • 5 साल के संचालन के बाद छोटे वित्त बैंकों में रूपांतरण के लिए आवेदन कर सकते हैं।	• नचिकेत मोर समिति की सिफारिशों पर स्थापित। • जमा राशि लेने की अनुमति। • ऋण दे सकते हैं लेकिन छोटे कर्ज पर ध्यान दिया जाएगा। • छोटे व्यवसाय, छोटे और सीमांत किसानों, MSME, असंगठित क्षेत्र की संस्थाओं को वित्तपोषित कर सकते हैं। • प्रेषण और क्रेडिट कार्ड प्रदान कर सकते हैं। • ATM या डेबिट कार्ड जारी करने की अनुमति। • सुनिश्चित करना होता है कि ऋण पोर्टफोलियो का 50% 25 लाख रुपये तक का अग्रिम है। • म्यूचुअल फंड, बीमा, पेंशन आदि जैसे वित्तीय उत्पादों का वितरण कर सकते हैं।